International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 42-45

हो और सबर जनजातियों के गृह वातावरणका उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (पश्चिम सिंहभूम जिले के विशेष संदर्भ में)

नितेश कुमार प्रधान[1], डॉ० पी० के० नायक[2]

[1] एम० फिल०, शिक्षा शास्त्र, डॉ० सी० वी० रामन् विश्वविद्यालय, कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] प्रोफेसर एवं डीन, डॉ० सी० वी० रामन् विश्वविद्यालय, कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

आज जब औद्योगिक विकास के लिए खनिज सम्पदा और जंगल–पहाड़ के इलाके राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के लिए अनिवार्यतः उपयोगी माने जा रहे हैं और ये सारी सहूलियतें इन्हीं आदिवासी अंचलों में सुलभ हैं तो क्या क्षेत्रीय या राष्ट्रीय हितों के लिए 10 प्रतिशत आदिवासियों को विस्थापित कर उनकी अपनी जीवन शैली, समाज–संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों में बलात वंचित कर किया जाए? यानी आज यह सर्वोपरी आवश्यकता दिख रही है कि विकास की मौजूदा अवधारणा की एक बार फिर समीक्षा की जाए और नई आधुनिक व्यवस्था में जनजातीय समूहों के मानवीय अधिकारों की समुचित अभिरक्षा की जाए। तो वह एक शिक्षित व्यक्ति के रूप में उभरकर आता है। शिक्षा ही एक आदिवासी के जीवन शैली को प्रभावित करता है। इसीलिए सरकार द्वारा आदिवासियों को शिक्षा प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रकार की योजनाओं का निर्वहन कर रही है। प्रस्तुत शोध पत्र झारखण्ड के पश्चिमी सिंहभूम जिले को लिया गया है। इस जिले को आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भी कहा गया है। यहां के आदिवासियों का रहन–सहन, शिक्षा को बढ़ावा मिल रहा है।

मूल शब्द : औद्योगिक विकास, जीवन शैली, समाज–संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों।

प्रस्तावना

पर्यावरण का अर्थ अत्यंत व्यापक है अधिकांशतः समाजशास्त्री और मनोवैज्ञानिक वातावरण को एक दूसरे का पर्यायवाची मानते हैं। परन्तु परिस्थितियों के आधार पर इनको विभाजित किया जा सकता है जैसे– प्राकृतिक परिस्थितियों को हम पर्यावरण कह सकते हैं जिसमें भूमि, नदी, पहाड़, शीत, ताप, वर्षा आदि सम्मिलित किया जाता है और सामाजिक परिस्थिति को वातावरण कह सकते हैं जिसमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक संगठन जैसे गृह, विद्यालय, समुदाय, धार्मिक संस्थाऍं आदि प्रमुख होते हैं।

शिक्षा का प्रारंभ प्रागैतिहासिक काल से ही माना जाता हैं। सर्वप्रथम मनुष्य ने वातावरण के अनुकुल ढलने एवं आचरण करने का प्रयत्न किया। मानव बुद्धि बल के आधार पर वातावरण से अनुकुलन करनें में सफल हो जाता हैं, और यही से शिक्षा का विकास प्रारंभ हो जाता हैं। मनुष्य अपने आदि युग में पशु तुल्य जीवन न जीता था। वह अपने रहने के लिए सुरक्षित स्थान (गृह) का निर्माण अवश्य करता था। परन्तु उस गृह में रहने वाले व्यक्ति आज जैसे– भावात्मक संबंध नही होते थे।

झारखण्ड में जनजातियों की बहुत संख्या है। आरंभ में जनजातियों का जीवन सरल एवं शांतिपूर्ण था। वे पहाड़ों में छोटी–मोटी बस्तियों में रहते थे। जंगल में कंद–मूल प्राप्त कर एवं शिकार कर वे अपना जीवन यापन करतें थे। व्यक्तिगत संपत्ति अथवा वर्ग–विभेद का आभाव था। कालांतर में गैर–आदिवासियों के संपर्क में आने से उनकी जीवनशैली में परिवर्तन आया। आदिवासी समाज तीन स्तरों – राजा और जमींदार, मध्यम वर्ग और सामान्य आदिवासियों की थी। सबसे अधिक शोषण तीसरे स्तर के आदिवासियो का ही हुआ।

आज घटते वन क्षेत्र से पूरी दुनिया चिंतित हैं। आदिवासी तो सिर्फ अपने अस्तित्व और आने वाली पीढ़ीयों की खुशहाल जिंदगी के लिये जंगल बचाना चाहते हैं। लेकिन आधुनिक समाज की सोच ने जीवन को लाभ की वस्तु बना दिया है, लेकिन हो एवं सबर आदिवासियों के लिए जंगल एक पुरी जीवन शैली हैं। आजीविका का साधन हैं। परन्तु वन नीति, भूमिअधिग्रहण एवं वन संरक्षण प्रबंधन जैसे आधारहीन कार्यक्रम से वनों का संरक्षण तो कम हो रहा है, उल्टे तनाव बढ़ता जा रहा है। वन संरक्षण में आदिवासियों का दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण है। जिस पर न तो अमल किया जा रहा है और न ही उसे मान्यता दी जा रही है। उल्लेखनीय है कि जंगल आदिवासियों का आर्थिक आधार ही नहीं वरन्, जीवन का आधार भी है, हो एवं सबर समुदाय की जीवन शैली, कार्यशैली में जंगल के दोहन का उनका तरीका अलग है। अपने नियम कायदों से वे पुरखों के जमाने से जंगल बचाते आ रहे हैं। आदिवासी अपने जरूरत के अनुसार जंगल से जितना लेते हैं, बदले में उसे कुछ न कुछ देते हैं। उनकी आदर से आज वन बचे हुये हैं। झारखण्ड में सरना के जंगल आदिवासियों का तीर्थ स्थान है, जहाँ से एक पत्ता भी तोड़ना पाप मना जाता है।

अध्ययन का औचित्य

जनजातियों में शिक्षा का विकास होना अति आवश्यक है। उसके उद्देश्य समय की विचार धारा और आवश्यकताओं के अनुसार बदलते रहते हैं हमने कुछ मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति में परिवार के सहयोग की चर्चा पहले भी कर चुके हैं। शिक्षा के अन्य उद्देश्यों की प्राप्ति में भी परिवार दोहरा कार्य करते हैं। एक तो वे उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्वयं प्रयत्नशील रहते हैं, और दूसरे वे उन उद्देश्यों की प्राप्ति में विद्यालयों की सहायता करते हैं, उदाहरण के लिए राष्ट्रीय एकता और अंतराष्ट्रीयता की भावना के विकास को ले लिजियें। आज हमारे देश में इन उद्देश्यों को सामाजिक और नैतिक विकास के उद्देश्यों से अलग करके समझा

जाता हैं। प्रत्येक विद्यालय में इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनेंक कार्य किये जाते हैं। इन कार्यो में राष्ट्रगान का सम्मान, विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान एवं अंतराष्ट्रीय महत्व की भाषाओं का ज्ञान मुख्य हैं। विद्यालय इन कार्यो को तब तग पूरा नही कर सकता, जब तक इसके लिए सहमति और सहयोग प्रदान नही करेगा।

जनजातियों के शैक्षिक विकास की दृष्टि से आधुनिक युग में जारकारी होना अति आवश्यक है। जिसके अभाव में बच्चों की शिक्षा बहुत प्रभावित हो रही है। उनके बच्चों में शिक्षा का विकास करने के लिए परिवार का क्या योगदान हैं? क्या सभी जनजातिय परिवार अपने बच्चों की शिक्षा पर यथोचित सहयोग देने में सफल हैं ? परिवारों की शैक्षणिक योग्यता का प्रभाव के बच्चों की शैक्षिक विकास पर पड़ता हैं? इसी समस्या के समाधान के लिए इस लघुशोध की आवश्यकता महसुस की गई।

समस्या कथन

''हो और सबर जनजातियों के गृह वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (पश्चिम सिंहभूम जिले के विषेश संदर्भ में)''

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा

- **जनजाति – डॉ. मजूमदार के अनुसार –:** ''एक जनजाति परिवारों के समूह का संकलन होता है, जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग में रहते है; समान भाषा बोलते हैं और विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में निशचित निषेधात्मक नियमों का पालन करते हैं और पारस्परिक कर्तव्यों की एक सुविकसित व्यवस्था को मानते हैं।''
- **शैक्षिक उपलब्धि–** विद्यार्थी स्कूल में रहकर जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त करता है, उसे उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। यह उपलब्धि किस सीमा तक प्राप्त हुई इसे जानने के लिये जो परीक्षण किये जाते हैं, उसे शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण कहा जाता है।
- **गृह वातावरण –** विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक विकास पर गृह वातावरण का प्रभाव पड़ता हैं। इसी वातावरण में बालक अनेंक प्रकार की साधारण तथा बुद्धि प्रधान शिक्षायें सीखता हैं। इसे ही गृह वातावरण कहते है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. हो एवं सबर जनजाति के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. हो जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सबर जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. हो एवं सबर जनजाति के बालकों के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. हो एवं सबर जनजाति के बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

$H0_1$: हो एवं सबर जनजाति के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_2$: हो जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_3$: सबर जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_4$: हो एवं सबर जनजाति के बालकों के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$H0_5$: हो एवं सबर जनजाति के बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन का परिसीमन

क्षेत्र – झारखण्ड राज्य के पश्चिमि सिंहभूम जिले के हो एवं सबर जनजातियों तक परिसीमित किया जायेगा।

आयु स्तर – 12 से 16 वर्ष आयु तक के बच्चों को लिया जायेगा।

स्तर – कक्षा 6वीं से 9वीं तक के विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

जनसंख्या – प्रस्तुत शोध में झारखण्ड राज्य के पश्चिमि सिंहभूम जिले के 'हो एवं सबर' जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं को जनसंख्या के रूप में लिया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में झारखण्ड राज्य के पश्चिमि सिंहभूम जिले के **हो एवं सबर** जनजातियों के 120 बालक–बालिकाओं को चयन किया जायेगा।

चरांक – चर का अर्थ एवं परिभाषा –चर ऐसी विशेषतायें तथा गुण होते हैं। जिसमें मात्रात्मक विभिन्नता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं, तथा जिसमें किसी एक चर अनुसंधान की केन्द्र बिन्दु हैं।

स्वतंत्र चर – शैक्षिक उपलब्धि

आश्रित चर – पारिवारिक वातावरण

प्रयुक्त उपकरण

अनुसंधान समस्या से संबंधित परिकल्पना के रचना के पश्चात् उसके परीक्षण के लिए आवश्यक तथ्य तर्क संगत की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध आंकड़ो को एकत्रित करने के लिए जो उपकरण प्रयोग में लाये जायेगें, वे विश्वनीय, वैध एवं वस्तुनिष्ठ होंगे। इस शोध में दो उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।

- **शैक्षिक उपलब्धि हेतु** :– डॉ. पी. के. नायक द्वारा निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रपत्र का प्रयोग किया जाएगा।
- **गृह परिवेश हेतु :–** डॉ. करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित भ्म्. डज्ञ (गृह पर्यावरण) मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

परिकल्पनाओं से प्राप्त निष्कर्ष

$H0_1$: हो और सबर जनजाति के बच्चों गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तलिका 1

S. No.	समुह	N	माध्य मान	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेश का शैक्षिक उपलब्धि	60	68.5	8-07	1-517	1-317	0-05 = 1-98	स्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेश का शैक्षिक उपलब्धि	60	66.5	8-55			0-01 = 2-61	

निष्कर्ष :– हो और सबर जनजाति के बच्चों के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

$H0_2$: हो जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तलिका 2

S. No.	हो जनजातियों के समुह	N	माध्य मान	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेश के बालको एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि	30	69.5	8.075	1.471	1.49	0.05 = 2.00	स्वीकृति
2.	उच्च गृह परिवेश के बालको एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि	30	67.3	8.049			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष :– हो जनजाति के बालक एवं बालिकाओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

$H0_3$: सबर जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तलिका 3

S. No.	सबर जनजातियों के समुह	N	माध्य मान	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेश के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि	30	71.31	8.24	1.48	1.27	0.05 = 2.00	स्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि	30	69.42	8.042			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष :– सबर जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

$H0_4$: हो एवं सबर जनजाति के बालकों के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तलिका 4

S. No.	समुह (बालक)	N	माध्य मान	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेश के बालक की शैक्षिक उपलब्धि	30	69.5	8.075	2.106	0.859	0.05 = 2.00	**स्वीकृति**
2.	निम्न गृह परिवेश के बालक की शैक्षिक उपलब्धि	30	71.31	8.24			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष :– हो एवं सबर जनजाति के बालकों के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

$H0_5$: हो एवं सबर जनजाति के बालिकाओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तलिका 4

S. No.	समुह (बालिकाओं)	N	माध्य मान	SD	S_{ED}	ज.जमेज टंसनम	सारणीगत मान (58)	परिणाम
1.	उच्च गृह परिवेश के बालिका की शैक्षिक उपलब्धि	30	67.3	8.049	2.077	1.020	0.05 = 2.00	स्वीकृति
2.	निम्न गृह परिवेश के बालका की शैक्षिक उपलब्धि	30	69.42	8.042			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष : हो एवं सबर जनजाति के बालिकाओं के गृह परिवेश का उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शैक्षिक महत्व

शिक्षा मनुष्य के अंतर्मन में स्थित मानव को जागृत कर उसे जीवन संग्राम के लिये तैयार करती है उसका महान उद्देश्य मानव के सर्वांगीण विकास में निहित है। शिक्षा ही मनुष्य की मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा नैतिक शक्तियों का पूर्ण विकास करती है अतः सफल जीवन के लिये शिक्षा अनिवार्य है।

हो एवं सबर जनजाति के बालकों के गृह परिवेश की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है अतः अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे घर में बालिकाओं के लिये ऐसे वातावरण का निर्माण करें कि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। अभिभावकों को चाहिये कि वह अपनी संतानों चाहे वह बालक हों या फिर बालिकओं दोनों को शिक्षा प्रदान करने हेतु समान अवसर उपलब्ध करवायें। अभिभावकों को अपने संतानों को सुरक्षित, विश्वस्त और सहयोगी पारिवारिक वातावरण प्रदान करना चाहिये जिससे कि उनमें अपने मित्रों एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ समायोजन की भावना पनपे।

सुझाव

1. जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक परिवेश एवं शैक्षणिक उपलब्धि में समायोजित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
2. अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने पारिवारिक वातावरण को व्यवस्थित रखे।
3. विद्यालय में जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं को यह शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे कि वे अपने पारिवारिक वातावरण और अपने शैक्षिक विकास में सामंजस्य स्थापित करें।
4. पालकों का यह दायित्व बनता है कि बच्चों के शैक्षिक विकास को प्रभावशाली बनाने के लिए पारिवारिक वातावरण में संतुलन और शान्ति स्थापित करें।
5. जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं को अपने पारिवारिक

वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर अपने शैक्षिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. हो एवं सबर जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं के प्रति शिक्षण उपलब्धि के भ्रम को दूर किया जाना चाहिए।
7. जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं में शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के गलत प्रभाव को दूर किया जाना चाहिए।

उपसंहार

"मानव वैज्ञानिक का एक समुदाय भारत को जनजातीय और गैरजनजातीय सांस्कृतियों के विलगाव और असम्बद्धता पर इतना अधिक बल देता रहा है कि आज हम उनको एकदम भिन्न मानने लगे हैं। लेकिन ऐतिहासिक संदर्भ में विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि उतनी भिन्न और असम्बद्ध नहीं हैं जितनी समझी और समझायी जाती हैं। बहुत सी जनजातियाँ हिन्दू समाज की जातियों में बदल गई हैं और बहुत सारी सांस्कृतिक विशेषताएँ उसकी सामान्य संस्कृति के अभिलक्षण बन गई हैं। जहाँ उनका स्थानांतरण जातियों में नहीं हुआ है, वहाँ भी गैरजनजातियों समुदायों से उनका सम्पर्क बना रहा है। यह जरूरी नहीं कि जो जनजातियाँ आज गैरजनजातियों साथ या समीप न रहकर उनसे दूर और अलग रही हैं, वे अतीत में उनके साथ या निकट नहीं रहती थीं।

उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार वे बहुत से भारतीय प्रदेशों में शताब्दियों से लगभग एक परिमती भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती रही हैं तो भारत के एक सीमांत से दुसरे सीमांत तक उनका आव्रजन ही हुआ है। प्रत्येक स्थिति में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बाध्यताओं के कारण, वे गैर जनजातीय समुदायों के सम्पर्क में आती रही हैं। यही नहीं उनका एक उल्लेख भाग गैरजनजातीय लोगों के साथ गांवों में निवास करता रहा है। इतिहास के विभिन्न कालों में आपसी संपर्कों से लेकर सन्निकटता और रक्त मिश्रण जैसी स्थितियों के कारण उन्होंने भारतीय संस्कृति के नाम से जानी जाने वाल संस्कृति का निर्माण और विकास किया है। शोधकर्ता ने इस अध्ययन में हो एवं सबर जनजातियों के रहन–सहन तथा उनके शैक्षिक परिवेश में पाया है कि जनजातियों में अभी भी शिक्षा के प्रति जागरूकता नहीं है।

सन्दर्भ

1. सिंहा एच. एन. सिलेक्शस फ्राम नागपुर रेसिडेन्सी रिकार्ड्स खण्ड 1,2,3,4, एवं 5, अध्याय –1 पृष्ठ संख्या 2–5।
2. कनिंघम, आर्केलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, 1878 ई. प्रकाशन, अध्याय –1 पृष्ठ संख्या 9–13, अध्याय –4 पृष्ठ संख्या 61–69।
3. बिहार का ऐतिहासिक अध्ययन 'आज तक' साहित्य भवन पब्लिकेशन्स.आगरा, अध्याय –5 पृष्ठ संख्या 61–।
4. जिला आदिम जनजाति कार्यालय पुस्तिका. जिला मुख्यालय बिहार, अध्याय –1 पृष्ठ संख्या 14–18।
5. कुशवाहा पी.सी. 'ग्रामीण समाज और विकास' योजना 18 अक्टूबर 1992. अध्याय –4 पृष्ठ संख्या 70–75।
6. लाव रमन बिहारी – शिक्षा के दार्शनिक और समाज शास्त्री सिद्धांत।
7. सुखिया एस.पी. – शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1973 ।